B.A. III (Hons)

G.B. VIII paper



# आहत सिक्के

Date..............................198

## Punch Marked Coins

जिन सिक्कों पर चिन्ह लगाए जाते थे उनको आहत सिक्के कहते हैं। ऐसे आहत सिक्के ही प्राचीन काल के मुद्रा सिक्के हैं। भारत के राष्ट्रीय सिक्के को "पण" कहते हैं जिसे कर्षा द्वारा तौला जाता था, अतएव इसको "कार्षापण" भी कहा जाता। इन सिक्कों के निर्माण के लिए जब धातु को पीट कर एक प्रकार प्रदान किया जाता था। अन्त में उस पर मुद्रा का चिन्ह भी अंकित कर दिया जाता था। इस सिक्के के निर्माण की शैली के कारण ही 1835 ई० में प्रिंसेप ने भारत के प्राचीनतम सिक्के को आहत सिक्के, चिन्हित सिक्का 'पंच' से निशान-बनाने वाला सिक्का का नाम प्रदान किया गया। चाँदी के आहत सिक्के प्राप्त हुए हैं। ग्रन्थों में तांबे के आहत सिक्कों के निर्माण की बात भी देखने को मिलती है। लेकिन इसमें कितना सत्य है, तब तक नहीं जाना जा सकता, जब तक तांबे के आहत सिक्कों की प्राप्ति नहीं हो जाती। इन आहत सिक्कों का 52 रत्ती ही था। इतिहासकारों का मत है कि आहत सिक्के 800 ई० पूर्व में भारत में प्रचलित था। यही समय आहत सिक्कों का मौर्यकाल में इनका विशेष प्रचलन था। यही समय आहत सिक्कों का अन्तिम समय माना जाता है। मौर्य काल में इनका विशेष प्रचलन था।

### आहत सिक्के कैसे बनाये जाते थे?

a. लम्बे b. चपटे c. चतुर्भुज d. वृत्ताकार (e) पंचकोणीय (f) षट्कोणीय

Scanned with CamScanner

## निर्माण की विशेषताएँ

इनके निर्माण तथा निर्माण की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:—

1. आहत अथवा निहित सिक्कों का कोई निश्चित आकार नहीं था, ये कई आकारों के होते थे। इन आकारों का उल्लेख ऊपर किया जाता है।

2. सर्वप्रथम चाँदी की छड़ को काटकर सिक्के तैयार किये जाते थे जिन्हें छड़नुमा (Bent bar) कहते थे। इनमें मोड़ रहता था।

3. आगे चलकर छड़ों को पीटकर चपटा कर दिया जाता था और इनके ऊपर चिन्ह अंकित कर दिये जाते थे। पीटने के आकार और इनके आकार में कोई निश्चितता नहीं रहती थी तथा वे देखने में भद्दे लगते थे।

4. अन्य शैली यह थी कि चाँदी-ताँबे के पत्तर को पतला बनाकर एक विशेष आकार जैसे गोल या चौकोर के छोटे-छोटे टुकड़े काट लिए जाते थे। इन टुकड़ों की तौल 32 ग्रेन होती थी। यदि इनका वजन बढ़ जाता था तो इनको थोड़ा काट लिया जाता था। ऐसा करने में इनके आकार में परिवर्तन हो जाता था। अन्त में इनके ऊपर चिन्ह लगा दिये जाते थे।

5. पहले पतली चादर को बाद में मोटी चादर को काट कर सिक्के का निर्माण किया जाता था।

6. ये सिक्के अनिश्चित आकार के तथा भद्दे होते थे। इस प्रकार के कार्षापणों के निर्माण का स्थान नहीं निश्चित किया जा सकता है।

7. पीटकर आहत सिक्के की प्रणाली के अतिरिक्त ढालने की प्रणाली भी प्रचलित थी। नली से लगी हुई धातु के

Gram—MAGVARSITY
Phone No. :

Date..............................198

सांचे में डाल दिया जाता था। सांचे में अनेक प्रकार के चिन्ह पहले से ही बने रहते थे। जब सांचे से सिक्के को निकाला जाता था। तब वह ठंडा हो गया रहता था। इससे निश्चित आकार का सिक्का तैयार हो जाता था।

8. मथुरा, राजगृह आदि स्थानों से इस प्रकार से ढले हुए बहुत से सिक्कों की प्राप्ति हुई है। एरण (म० प्र०) से कांसे की धातु का एक सिक्का बनाने वाला ठप्पा भी मिला है। इस ठप्पे में गोल आकार के चिन्हित सिक्के तैयार किये जाते थे। ई० पू० में कार्षापण निम्नलिखित तीनों विधियों से तैयार किये जाते थे :—

A. पत्तर काटकर (Un Punched)
B. सांचे में ढालकर (Cast Punch Marked)
C. ठप्पे से निशान लगाकर (Punch Marked)

प्राचीन सिक्कों के निर्माणकर्ता

डा० वासुदेव उपाध्याय के अनुसार "विद्वानों में मतभेद रहा है कि कार्षापण का निर्माणकर्ता कौन था? सिक्के किस अधिकारी की सहायता से तैयार किये जाते थे। मौर्य काल से पूर्व भारत में कोई ऐसा साम्राज्य स्थापित न हो सका जो इस दिशा में ध्यान देता। देश की समृद्धि, व्यापार पर निर्भर है तथा व्यापार की उन्नति—, सिक्के पर। प्राचीन भारत में व्यापार श्रेणी तथा 'निगम' नामक संस्थाओं के हाथ में था। राष्ट्र का सम्पूर्ण जीवन एवं वैभव व्यापारिक संस्थाओं

के हाथ में था। शहर का सम्पूर्ण जीवन एवं व्यापारिक संस्थाओं की संस्तुति पर निर्भर था। वैशाली भीटा तथा राजघाट से 'निगम' सम्बन्धी श्रेणियों की मुद्रायें (seals) उपलब्ध हुई हैं। अधिकतर विद्वानों का मत है कि सिक्के तैयार करने का अधिकार जन 'श्रेणी संस्थाओं' को था या यह कह सकते हैं कि व्यापारिक संस्थायें 'कार्षापण' तैयार करती थी। ऐसा हो सकता है कि कार्षापण पर चिन्हों के अंकन का काम 'श्रेणियों' के अतिरिक्त इस कार्य को सुनार जाति के लोग भी करते थे। आगे चलकर इस कार्य को शासकवर्ग ने अपने हाथ में ले लिया। मौर्यकाल में 'श्रेणी' तथा स्वर्णकार सिक्के तैयार करने के कार्य को करते थे। कोई भी समाज का सदस्य अपने घर की चाँदी इनके पास ले जाकर सिक्के तैयार करा सकता था। सिक्कों के ऊपर 'श्रेणी' की मोहर का रहना अति आवश्यक था। जनता तभी उस सिक्के को ग्रहण करती थी लेकिन आगे चलकर अर्थात मौर्यकाल से टकसाल सरकारी नियन्त्रण में आ गये तथा सिक्कों का निर्माण किया जाना एक राजकीय कार्य हो गया।

## आहत मुद्राओं के चिन्ह

जिन सिक्कों पर चिन्ह अंकित किए गये आहत नाम (Punch Marked) से कहा गया। आहत सिक्कों पर इन चिन्हों के अंकन का कारण क्या था। चिन्ह कई प्रकार के थे। इन चिन्हों की भिन्नता के क्या कारण थे? यह सभी प्रश्न हमारे सामने आते हैं। इसके कारण आहत सिक्कों के वास्तविक स्वरूप का निर्धारण कठिन हो जाता है। यह तो निश्चित-सी बात है कि सिक्कों के निर्माण के समय उनके ऊपर चिन्हों का अंकन किया जाता था। कौन-सा चिन्ह लगाया जाय, इसका निर्माण भी कोई सत्ता अवश्य करती रही होगी। समय-समय पर विभिन्न जातियों ने-

में सिक्कों पर चिन्ह लगाने का। इसी कारण आहत
सिक्कों का काल निर्धारण करना एक ~~सरल~~ समस्या
बन गयी। पश्चिमोत्तर प्रान्त में सिकन्दर या यूनानी
शासक डियोडोरस के सिक्कों के साथ तक्षशिला की
खुदाई में प्राप्त सिक्के मिले हैं। इससे कार्षापण
की तिथि 400 ई०पू० वर्ष निश्चित करना सरल हो
गया है।

प्राप्त सिक्कों के ऊपर अंकित चिन्हों के
परीक्षण से पता चलता है कि अग्रभाग पर चिन्हों
की अधिकता दिखाई देती है। चिन्ह प्रायः पाँच
के समूह में देखने को मिलते हैं। अधिक संख्या
वाले चिन्हों के भाग को अग्रभाग (observe)
कहा गया है। पृष्ठभाग (Reverse) पर चार अथवा
उससे कम समूह के चिन्ह दिखायी देते हैं।

प्रचलन काल: ~~कुछ लोग~~ मौर्य काल के
पश्चात आहत सिक्कों के प्रचलन की कठिनाइयाँ आ गयी।
लेकिन मौर्यकाल में पूरे देश में लगभग एक ही प्रकार के सिक्के
प्रचलन में थे। कौटिल्य ने चिन्ह लगे ऐसे सिक्कों
को 'रूप्य' कहा है। इसके पदाधिकारी को रूपदर्शक
कहा था। इसी से आज हम रुपया शब्द के सिक्के के
अर्थ में भी प्रयुक्त करते हैं।
संभवतः कह सकते हैं कि—

प्रारम्भ से मौर्यकाल तक आहत सिक्कों का प्रचलन विशेष रहा है। ई० पू० छठीं शताब्दी तक भारत में इन सिक्कों का प्रचलन बहुत था।

Scanned with CamScanner